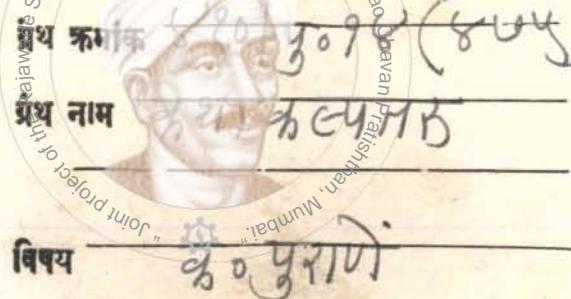


इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुळे.

—: हस्त लिखित ग्रथ संग्रह :—



विषय

कृपापाणी

ग्रथ नाम

कल्याण

"Joint Project of the  
Rajwade Sansodhan Manda, Dhule and the Yashvantrao Chavan Pratishthan Mumbai".

(1)

॥ ईतिकथाकाव्यत राजवादे  
मन्त्रकमनाहरु ॥

॥ प्रारभ्मा ॥



"Portrait of the Rajavade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Pashwantii Sabavan Pratishthan Mumbai"

संस्कृत  
पंच  
१५७

(2)

क० स० ५  
॥१॥

श्रीगणेशायनमः। श्रीकृष्णपरमात्मनमः।। श्रीरामवरदमुर्तयनमः।। श्रीमहरस्वयेनमः।।  
 श्रीयुक्त्यानमः।। ॐ नमो निरारायणा।। ज्ञानं गनिपरिपूर्णो।। तुद्बृद्धसत्त्वयुणा।। चुं  
 विद्वा।। शा। तुकार्यकारणकर्त्तपितृभोगज्ञानञ्चालिट्टाना।। तुलनिर्युलउनपता।।  
 तुर्मिद्वा।। रा। तुसत्रिदानंदधना।। तुप्रवक्त्रानिवासि।। त्रियुलायुणामाजिकं  
 वन।। तुंविन्द्रसिना।। अजयं प्रथाजिप्रमुखं शा।। महामागाप्रमहंसा।। हृष्यकमिति  
 विनांशा।। तुंविरामा।। जयं जयानिश्चला।। तुंप्रवक्त्रालित्रकुरा।। तुप्रसरगामा  
 रा।। अमोनिलिंगान्वं।।। तुंगद्वनालिनास्त्रा।। तुसुननासुक्षमांशा।। तुगंधर्व्यनारसापर-  
 रा।। अयं निलिंगान्वं।।। तुंगद्वनालिनास्त्रा।। तुसुननासुक्षमांशा।। तुगंधर्व्यनारसापर-  
 रा।। अयं निलिंगान्वं।।। तुंगद्वनालिनास्त्रा।। तुसुननासुक्षमांशा।। तुगंधर्व्यनारसापर-

राम  
॥१॥

(2A)

नंतात्मुं॥७॥ त्रुपरमालाविश्वक्रमा त्रुनिव्याधिर्गेव॥ निरंतरि॥८॥ त्रु  
प्रवणविश्वालिंगि॥ त्रुजानसूक्ष्मवीर्यादि॥ त्रुमक्षेसवीसहि॥ नयनारसिंहा॥९॥ त्रु  
सक्षानाविनिधि॥ त्रुसदेवामागिउद्धधि॥ परिसरवनेउपाधि॥ विग्रहत्तुं॥१०॥ भाषु  
नियां त्रुपरमारिरा परित्तुञ्चलिप्तभृतमात्रा नवीन्यग्रणिपत्रि॥ जबनीरतर॥११॥ त्रु

वनावेनिवन॥ त्रुजानेत्रविश्वजन॥ अमालालक्षपदोवेष्वन॥ त्रुविहरि॥१२॥ त्रुमनसु  
स्थ्योवेषन॥ त्रुत्वमगादिसाधन॥ त्रुवदगमविरत्॥ अमारायणा॥१३॥ नयनया  
निमकवस्त्रा॥ कृपावंतामहाग्रिङ॥ धर्मश्रितिपतिष्ठा॥ श्रीगामिंद्रत्तुं॥१४॥ आ

(३)

क०स०६  
॥२॥

आताश्वेषोहसुदिसवन् ॥ मापेमोवीकेविगगन् ॥ त्रिलिंगादिक्षमीमा ॥ वलितानुन् ॥ ५ ॥ जे  
सेवोवेउवोलाववाळक् ॥ परिमानप्रकृत्यकोतक् ॥ कंलिगपूजावयारंक् ॥ यापुलग्नि  
॥ ६ ॥ शाद्व्यप्रश्चित्तिश्चर्थ ॥ हायाविभायारनेता ॥ नेतकाव्रवातिआचक् ॥ वानिवानुज् ॥

लणानिनुभिमापिता ॥ नुब्रयायापिकुल् ॥ तुम्हेकेलियास्तवन् ॥ तेसकियापिता ॥ जुंगदाधिष्ठोता ॥ उम्मकानुविद्वां  
तुम्हेकेलियास्तवन् ॥ तेसकियापिता ॥ जुंगदाधिष्ठोता ॥ उम्मकानुविद्वां  
श्चान्तराविमापिविनुवलि ॥ जिमुंसवज्ञान् ॥ वापुकुरमणि ॥ नरित्योन्मृतकरणि ॥ वौ  
लविमन् ॥ ७ ॥ जेसवालक्षामेविकर ॥ कावमेदानिधूनहैर ॥ नेसावेलविकल्पनुरु

राम  
॥२॥

(3A)

युथराजहा ॥२१॥ को अंधा वाग विगेवस ॥ नात्र रिस्त्र धारि यावा सौरस ॥ नेस बोल विन  
वरस यंथ कथे मिं ॥२२॥ मांग जाली रुप लिवृत वता ॥ अनिपंव मसल बक्क विश्वस्य ॥ ने  
पूर्व किरा विश्वनता ॥ कृष्ण निधि ॥२३॥ मगन यकृश वता ॥ वीजउ पदमिल निद्रावस्थ ॥ यं  
थ करिना नामिन ॥ कल्पन कृहा ॥२४॥ अनु युसाव मिलागण्डा ॥ याणि कुक्कुंवेला रि  
ला आयास ॥ मगन मिलायुर्लभास ॥ वालम कता ॥२५॥ अनान मुना ओता ॥ मुट अथवा  
जाना ॥ पूरहारि कथे विश्वस्य ॥२६॥ हो ॥ जैसिलृणानिकाधरि भ्रमरि ॥ नेम  
यान विस बैस्त्राम भरि ॥ नेस ाहरि वेध सत्ता स्ता ॥ दुलम ओता ॥२७॥ अनान य सोविसादन  
भयोराहा विनेके विष्टेरण ॥ लग्ना न पूर्व भाष्य गर्स्त्रसम ॥ होउ न गोकं ॥२८॥ अनान साक्षा

१३।  
४१।

(१)

क० स० ५  
१३ ॥

नग्रोता ॥ श्रवलियाविहरितथा ॥ जैनवनपासिमहोवथा ॥ काढुजोकौ ॥ २७ ॥ जैसिनानारसाविप  
काच्चे ॥ वरिविलारलियेवाले ॥ बाकन्तन्त्रिकाकरणे ॥ सदेवजैसे ॥ ३० ॥ निसाहकथा  
कल्यतरु ॥ अतियकिंचाहारु ॥ वाखुष्वावामनोहरु ॥ अनाजालिलेतेवां ॥ ३१ ॥ मार्कियशा  
लिमछपूराण ॥ अमिश्राणिकूमधुराण ॥ नस्त्रयुतुलक्षण ॥ प्रालिलिंगपूराणे ॥ ३२ ॥  
वामनवराहप्रपूराण ॥ गरुदनारहरुहरु ॥ ॥ ३३ ॥ प्रलग्नमहर्षिवीधन ॥ मविषालर्णे ॥ ३४ ॥  
ब्रह्मांडब्रह्मपूराण ॥ ब्रंसकेवनसतरादे ॥ ॥ ३५ ॥ एवरोवसुलक्षण ॥ अनाजगवते ॥ ३६ ॥ पु  
रियासवविसात ॥ जैसियुटगभिविपवधार ॥ इपयगभिविपवित्रा ॥ इतजैसे ॥ ३७ ॥ कां  
पुष्पगंधिनाश्चेदू ॥ मधुमसिकारसिमदू ॥ कांपुष्पीमधुनियाश्चेदू ॥ कनकजैसे ॥ ३८ ॥ आ

राम  
१३ ॥

(३०)

ताध्यसोहिवर्णन ॥ श्राद्धसापाहिनीकरण ॥ धर्मोनपत्यह्यापमारण ॥ कायकरणे ॥ ३७।।  
 भैत्यराजा भारवि ॥ श्राणिवेशोपायनवलभाकी ॥ पादाहिविसुखसंगति ॥ घउलियकिंद  
 याउन्यपानुकसुवादृ ॥ जोहस्तिकृपारसामधु ॥ नाविस्तारलुञ्चमादृ ॥ श्रानपासि ॥ ३८।।  
 नेसकब्जसाराव्यसारार ॥ श्रीरामिरायोदयनि ॥ नेआनिएकावेपावि ॥ लुणोकरणयाज  
 वल्की ॥ ३९।। ॥ ३९॥ ॥ श्रीरामकल्मणरूपामुखकमनोहर्वा मंगगव  
 रणंनामप्रथमोथाय- ॥ ४०।। श्रीहर्षलालामलु ॥ ॥ ४०॥ श्रीरह्वा ॥ ॥ श्रुतमवतु ॥  
 श्रीरामवह्वा ॥ मगद्याजन्मेजयो ॥ वैशंपायनात्माममागिवागेहो ॥ नरिमनिरायकसंदेहो

(5)

कै० सं० ८  
॥४॥

छेत्यासो ॥१॥ सर्वगुणशालिति ब्रह्मना दानादयाक्षालिसमर्थी पक्षपतिशालिपि  
 दूनक ॥ नदेसोकलि ॥२॥ मग्नस्त्रामन्तर ॥ रेखायकश्चारामवंद्र ॥ जोरायाद्वार  
 शायाकुभर ॥ सूर्यविगता ॥३॥ निवालिमकमाषिलत्रयना  
 मना ॥ शरवकोटिकलेभाभरता ॥४॥ रुद्रायणो ॥५॥ मग्नस्त्रायरिक्षिति ॥ पुक्तिकिं  
 चाकि ॥ परिकिंविद्युत्सनि ॥ नदेसो आति ॥६॥ तृष्णकापानालप्रसन्त ॥ जेहदर्यु  
 वेश्वलेज्ञान ॥ हेसांगपासमुक्तश्चवरान ॥ शरामकथेन ॥ हुमग्नमुविलेणगमार  
 ना ॥ पृथ्वीपाहिलभ्रमता ॥ परिनुजसातुसाश्रोता ॥ नदेसोकहि ॥७॥ परिवृष्टिय  
 शिक्षांगति ॥ मेनह्योउलिहरिमन्ति ॥ जविंविजसावारितातुपनि ॥ निक्षेच्छा

रुम  
मला ॥

(५९)

परा॥१॥मगत्सलेवेशंपापन॥रायातुमहाविवक्षण॥तरिपूसिलेपेक्षेषापन॥आ  
 ईक्षाना॥१०॥कोर्णोयेकेस्थानि॥ब्रंचाहेमाध्यानि॥तुवंरामदेखलालोयनि॥हृष्ण  
 माजिं॥११॥मगत्पूर्वालिग्नाग्नु॥उभ्या रामदेखलसम्मुख॥तोत्रानेलिहला  
 खहस्ते॥स्लोक्युक॥१२॥मगत्सलगत्प्रक्ति तुक्ति॥नारदाससांगेवत्सुमि॥मग  
 नारदकेलग्रामस्त्राकि॥दामाप्राणसाव॥१३॥मगत्शादित्रवसान्॥नारदरसिलक्ष  
 वरन्॥मगसुखिरातनिआपना॥शाज्ञा रारपुतिरासि॥१४॥तर्पेवालिकक्षिरा  
 ज॥याकाशिष्ठनारदाज॥मगत्प्राप्तलाश्चावनि॥ब्रह्मयावां॥१५॥परस्परेजा  
 लानपुरक्तर॥हृष्मदेउग्निलासादर॥मगपूरनलालिक्षेष्वर॥वालिक्षों॥१६॥

(6)

क० स०  
॥५॥

नारदासिलोवालिक ॥ सर्वगुणाणाणिपूल्पलोक ॥ महाशिक्षाणिधर्मपाचक ॥ कोण  
 असेल ॥ ६६ ॥ मगमानस्तोकिग्रूपति ॥ नारदवलानोदायरथि ॥ जोनानकिरमण्डि  
 योध्यापति ॥ श्रीरामराव ॥ ७० ॥ सर्वज्ञाणाणिपूल्पाचक ॥ गरुदाधिर ॥ कृष्णवंताणाणिग्रूपिरावा  
 रागिकश्चाणिउद्धरा ॥ रघुनंदनतो ॥ ८ ॥ नारद  
 येकवाणपरिव्यप्ति ॥ नवजेथाना ॥ ९० ॥ नारद  
 नेत्रसर्वव्यापिश्चाणिसाकारा ॥ तोशीरामवंट  
 श्रनस्यरा ॥ रूपश्चाणवाणाणिविषदास ॥ नारदकिरमण्डनो ॥ १११ ॥ तोकाकृकामाण्डि  
 गिन्त ॥ विधिभागिनियवंत ॥ निरासश्चाणिपित्रुनक ॥ श्रीरामवंटतो ॥ १२१ ॥ इसेमुदिल

राम  
॥ १ ॥

(60)

श्रवणगत ॥ श्रावित्यवसानसमाप्त ॥ तोसांगोनपूरुषार्थीगेलानारहतो ॥ २३ ॥ मगव  
लिमक्ष्यालिमरदान ॥ श्राणिस्त्रूमंतपागदित् ॥ अनिध्युग्यालेगारयुद्धु ॥ श्रानलिगि  
श्राणिसारिलेश्राननपरा ॥ नासमेवदिवता च ॥ मगायेजलिमुविजन ॥ मंदिरासिं ॥  
दृष्टिपाहानिवनस्त्रिं ॥ पुष्पपादातलिमु ॥ चन्द्रोनिदेखिलगाव्याहानिं ॥ पक्षिमु

लक्षण ॥ २४ ॥ यक्कोंवशालिदूसा ॥ ॥ स्त्रिपुरुषमहाप्रीतिनि ॥ नवंकोंयथाडित् ॥  
पाणिं ॥ निषाध्येयक ॥ २५ ॥ मगसापाण ॥ पक्षिय ॥ किलापमांडिलापक्षिकाते ॥ तेनंगा  
सालिते ॥ पैउठका ॥ २६ ॥ तिएकानतिरोगाका ॥ तेसोदृःस्त्रिमालिकामुण्डपक्षि

(८)

क० स० ५  
॥६॥

यावदिलानीराणका ॥ याधातुंवा ॥ १९ ॥ मगायुधोभुसलाक्षिरण ॥ विभिन्नियालपार  
 धिजन ॥ नवंश्रापवोलिलायापण ॥ वाग्निकरण ॥ २० ॥ ग्रंथेरव्याधापापिदा ॥ अक्षमो  
 निसिमग्नसा ॥ जातवेष्टिग्नायुधपर ॥ हिमतुना ॥ २१ ॥ मगायुधविश्वलानिजमुवनि ॥ आ  
 नस्त्रैसलावंदापनि ॥ नवंश्रोक्तव्यवलामनि ॥ पक्षिलानि ॥ २२ ॥ मगायुद्देष्यवर्णलि  
 तोवन ॥ आरामविनुकरश्चाधन ॥ या ॥ रितक्रांतवंधन ॥ देवमितरि ॥ २३ ॥ व  
 सामालोनियस्तमक्तार ॥ नेलासूरिजालाहृष्ववरा ॥ निष्ठुष्टित्वसाक्षारोदास  
 लाशीब्रंहेदव ॥ २४ ॥ लिंगिकालिकामिन्वलिं ॥ नवव्रयादसिन्जाथामिं ॥ हानिषेउनि

राम  
॥६॥

(३८)

यांलेखलि॥ संगिरामायण॥ ३७॥ प्राण्डियवत्तुर्मुख॥ तुथ्यानिदेवतोसिजोस्तोक॥  
तोविहोश्लोक॥ श्रीरामकथेता॥ उद्धास्त्रीरामवेगुण॥ नारदकेलवुजश्वरण॥  
तेजानकाटश्रीरामापण॥ कलिहिण॥ ३८॥ तुम्हियमुखिविभृतेरा॥ निंमिकरिनगासा  
चारे॥ निसेलियकिजेस्थूधोरे॥ नारदभिष्ठान॥ ३९॥ त्वंगोमया श्रीरामवेयसिव॥ तु  
बोलसिलेनकरिनसावार॥ आदिश्वरसंभास्य॥ कथिवहिलां॥ ३१॥ एसाहुनि  
यामहावर॥ मगवोगलगाच्छुर्॥ त्वंगानिवेसलाक्ष्यर॥ वालिमकने॥ ३०॥  
श्वारिथारिश्वरथारवलि॥ दिनघालमुरिमुनियेमुसकमुनि॥ तोस्तोकगान  
काबि॥ लिहिलानरहाते॥ ३१॥ मायुमवेसलापुढ़ि॥ त्वंध्यानिदेविकिश्रीराममु

(8)

क० स० १  
॥७॥

सु

ति। पद्म विष्णवे वर्जिति। किंगरजि॥ ४३॥ किंगयोगरिलादशरथ॥ नराजिवेसवावाजरथ॥  
 मगवनवासारधुनाथ॥ निधानादेवता॥ ४४॥ आणविकुल्यवृत्ति॥ प्रजापितुनियासमस्ता॥  
 श्रीरामन्यावयामायुता॥ आलाजरथ॥ ४५॥ पितृमानायोद्युमेव॥ नेतुलंपिरविमा-  
 त्र॥ राजात्मिलेसमथ॥ नरथालुज॥ ४६॥ रामाच्यापाइका॥ नरथेनलियोदरथा  
 मगसिंहासनिक्तुनिक्तिश्च॥ करते पता॥ ४७॥ भगवनरथेसांगिलिप्रयोध्या॥ नंदिया  
 मिरोहसर्वदा॥ तवंश्रीरामश्राजमहायाधि॥ त्रिगस्त्रिश्रामासिं॥ ४८॥ मागनाथ्या  
 नावलावालिका॥ तवंसरवेगयोवलारसुकुकटिका॥ तवंजनघेउनश्रालयेक॥ वा  
 तदिग्नारथासिं॥ ४९॥ तवेष्युद्धगतिकेलिदक्षरथा॥ सवेलक्ष्मणश्राणिग्निज॥ मग

राम  
॥८॥

(8A)

श्रीरामचन्द्रालग्नामारवदा॥१॥ पृथिवटिकेसिं॥  
विश्वालग्नाभृगवेशा॥ त्रिवर्णीत्तरोलिप्तु  
दिल्लारवेशा॥ युग्मत्रिकृतकवथिले-पाराप  
त्रावका॥ ८१॥ पृथिवयिलाकेवागि॥ अपाम  
लि॥ गिराशरीसा॥ ८२॥ मुग्गेजेकि,  
यिकेलिहोडि॥ आधिववाच्चरे॥-  
रघुनाथ॥ लंकादेउनवारणगवान्॥ ८३  
प्रति॥ शालिदिव्यिंडनरलितिनाम्भुवि॥

४०॥ तेयेविदंविलिसुपर्वनसा॥ आलिमरि  
उच्चा॥ रावराराये॥ ५०॥ मगजदयुपा  
॥ मगहुमंवाहकग्रहणे॥ मिकले  
वसदाजविभि॥ मगञ्चगदीगलाटरो  
मि॥ आलिमसमुद्धायत्त्वाशिवि॥ लक्ष  
नत्याधिलाखुभीत्सुनो॥ रावराकुंभुक्तु  
गात्तुलिमिनोन॥ ५०॥ मगतेज्ञालयपोथ्य  
मगनदविलिमाएुनिपावनवासासि॥ ५०

(9)

क० स० १०  
॥२॥

मगेत्वालिको याअपर्मदिर ॥ दोनि इत्रपतवलि भुंदरि ॥ लहुंय कुरागा ओवे यरि ॥  
 रेविलभाव ॥ हु ॥ मग इत्वेसालिभाव ॥ अयोध्य आलिलिगाभारत ॥ मग सपयसा  
 रथ्याकान्ताणि लिभुमिमानि ॥ ४७० मग रथ्यालिकाला यिकांतिमां उलावच  
 आवासरलारेव ॥ आरामराय ॥ ॥ ३८ ॥ रथ्यालिकाला यिकांतिमां उलावच  
 पर ॥ नकं आलब्रावरण ॥ दुवहिट्वे ॥ ॥ ३९ ॥ मग लापेकशलामंदिर ॥ वारिताजो गं  
 कल्पहोति ॥ मग लक्ष्मीलोगलाश्वरा ॥ ॥ ४० ॥ नावासि ॥ हि ॥ मग सरलानोयकात ॥  
 वैकुंठागलरथ्यनाय ॥ हिसादेसनरथ्यनाय ॥ चालिकजो ॥ हि ॥ मग भरद्वाजल  
 लागाओविा हिस्तोरसोगवपृथकि ॥ जिलोमनहोयसुति ॥ आवर्योयि ॥ हि ॥ मग

राम  
॥२॥

(१८)

नेत्रान्कोरिशमाप्यला ॥ भरद्वाजासिंकेश्वरला ॥ त्रिरिक्षयेनसुखेज्ञान ॥ जलिसम् ॥  
पग्नन्मेजप्त्वलेगासावात् ॥ भरद्वाजेनपित्तेरामवस्त्र ॥ निसांगावेसविसरा ॥ वेंगं  
पायना ॥ इष्टासगमुनिस्त्राणावारता ॥ अवासांगनशीरामकथा ॥ नौसावध  
हाउनियाआनां ॥ अद्वकरापां ॥ इ ॥ सगमगल्युदगिवारवज्जन ॥ द्यावाटत्तरथ  
नामेश्वरसुज ॥ नौअपोभ्यादिष्टानवराज ॥ सूर्यवेत्तिष्ठ ॥ इ ॥ द्याकोग्नल्लाट्टानि  
नरि ॥ अपोध्यानावेमहापुरावरारागाविस्तारा ॥ एक्कनिवां ॥ इ ॥ नेत्राधानवल  
वेमुखे ॥ स्पणोनपाहोआललहमलावरा ॥ आसिश्रद्धाकलिंच्चादिपुर्वषं ॥ पाहा  
वयाविं ॥ इ ॥ नदेखोननगार ॥ भगवकुलसांउलेपरहारा ॥ नरित्वलवियावेसरा ॥

कृत्ति  
॥१॥

पां गुवेमासिं॥६५॥ सां गोननगरायावित्तारा॥ नरितोरोमित्तामयंकरा॥ जैसापतिविष  
ग्रवंकरा॥ क्रिमिनीता॥ ७६॥ लांगानभाराहृष्टकटा॥ नमुकाफ्कांविलोंसंपुट॥ कं  
गेसांलकविठा॥ अपानरघो॥ ७७॥ नमारिवरालेमिलकोकिङ्ग॥ काधतिविलोपुष्प  
कमा॥ नेसिरामविष्णवज्ञाना॥ अवाधानि॥ ७८॥ मगमधादगारयविष्धान  
तेपावमहासुजाल॥ चोहाविश्वावपरिय॥ महाविजितं॥ ७९॥ रास्त्रवर्धनुआसिसि  
धाथी॥ दृश्मिनपश्चात्तिगया॥ ८०॥ उश्चालिसुमंतु॥ अपराकर्त्ताभवान्ना॥ रि  
मगसकजपथनासःहित॥ नदिवैसल्लारवेदश्चरथ॥ मगहोउनिधादृखिन॥ वोलि  
लाकाहिं॥ ८१॥ म्यां धर्मकिलेगावहुन॥ एवेविष्णवविष्यथ॥ विशापावलिबहुन॥ जयं ॥८२॥

(10A)

कर ॥७॥ त्रिरिपुत्रदील्कार्यलिगि ॥ शामकंरहियेहोमुपागि ॥ अषिश्चालुनिपाविगि ॥  
सांगकार्यनि ॥७॥ नवंरापासिल्लयामिता ॥ प्यालकिलाहोनामुदार ॥ अविंसिंकरि  
तांविवार ॥ बदिकाशमि ॥७॥ नेष्टकावितिसवलुभार ॥ काहिव्वालिलनिपवित्रा त्रि  
मजश्चाभ्वलउनर ॥ शानिसाथि ॥ ८॥ त्रिरिपुत्रमुसिविवानि ॥ नेकगारापादशारथा  
मगनेजालवोलन्न ॥ सुमंत्रधा ॥ ९॥ रामप्रधिरोमवरण ॥ सुर्खंशिमहपविण  
यंगदशिवापंचन ॥ महाराज ॥ १०॥ सावियेदशिश्रावष्टलि ॥ साटिवेष्टनाहिनि  
वन ॥ बहुतश्चाटलेफनाजन ॥ श्रम्भोक्ता ॥ ११॥ मगविप्रासिल्लयोरोमवरण ॥ मज  
पानकहायेकराप्रस ॥ मासियेदग्गवरिपन ॥ त्राल्लकां ॥ १२॥ त्रिरिसांगगवाकाहि



## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : [rajwademandaldhule@gmail.com](mailto:rajwademandaldhule@gmail.com)